Himalayan Journal of Social Sciences & Humanities
(A Peer Reviewed Journal of Society for Himalayan Action Research and Development)
ISSN: 0975-9891

महाप्राण निराला के साहित्य में हाशिये का समाजः– ''विमर्श'' के क्षितिज

एस0डी0तिवारी
विभागाध्यक्ष हिन्दी, हे0न0ब0गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

Manuscript Info

Manuscript History

Received: 19.10.2016
Revised: 27.11.2016
Accepted: 21-12-2016

कुंजी शब्द– *ाब्द– निराला,विमर्श,*
सामान्य श्रम–संस्कृति
जन–प्रतिष्ठा,चिन्तन,

सारांश–

प्रस्तुत शोध–पत्र में ,निराला–साहित्य में अभिव्यक्त दलित एवं स्त्री–विमर्श के बिन्दुओं पर, 'विमर्श', की दृष्टि से विचार किया गया है।

महाप्राण ''निराला कवि के रूप में जितने प्रसिद्ध रहे हैं,गद्य के क्षेत्र में भी, उन्हें वही सम्मान प्राप्त है। छायावादी चतुष्टयी कवियों में उनकी गणना श्रेष्ठ कवियों में होती है। गद्य–पद्य में,उन्होंने हाशिये के समाज का बड़े प्रभावकारी और यथार्थ ढंग से चित्रण किया है। 'सामान्य की प्रतिष्ठा' और 'उपेक्षित जन के उन्नयन' के लिए,उन्होंने ऐसे चरित्रों एवं सामाजिक विषमताओं को उत्कीर्ण किया है, जो वर्तमान 'सामाजिक सन्दर्भ' में और भी अधिक 'प्रासंगिक'हो उठे हैं। निराला जी का सबसे अधिक सामाजिक प्रदेय यह है कि उन्होंने अपने क्रान्तिकारी विचारों और कर्मों से उपेक्षित जनों की पीड़ा को वाणी दी है।

आधुनिक सामाजिक 'विमर्श' के दायरे में,यदि कोई क्रान्तिकारी कवि अथवा साहित्यकार अपनी सम्पूर्ण चेतना के साथ,अपने साहित्य में अभिव्यक्त होता हुआ दिखाई देता है, तो वह हैं–महाप्राण निराला।महाप्राण निराला के साहित्य –गद्य अथवा पद्य –में हाशिये का समाज जो 'विमर्श' का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है,पूर्णरूप से प्रतिबिम्बित ही नहीं,अपितु सजीव हो उठा है।

'विमर्श' का अर्थ है–विचार,विवेचन,परीक्षण,समीक्षा,तर्क आदि।''[1] किसी विषय पर गम्भीरता से सोचना,समीक्षा करना,मीमांसा करना,खुली बहस करना 'विमर्ष' कहलाता है। सम्प्रति,'नारी–विमर्श' एवं 'दलित–विमर्श' साहित्य और समाज के चिन्तन के मुख्य विषय बने हुए हैं। इस चर्चा के बिना जैसे कोई आधुनिक हो ही नहीं सकता। इस 'विमर्श' का मूल उत्स देखा जाये,तो 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'के होते हुए भी, 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्' में निहित है।

© SHARAD

'हाशिये के समाज' के अन्तर्गत वे ही लोग नहीं आते हैं,जो दलित,निष्पीड़ित,अत्याचार–अन्याय से प्रपीड़ित,अनादृत,बहिष्कृत होते हैं, अपितु वे लोग भी आते हैं,जो ऐसे पद–दलित,शोशित–पीड़ित जन के पक्षधर होते हैं अथवा उनकी वकालत करते हैं। निराला जी ऐसे ही समाजचेता साहित्यकार रहे,जो उच्च कुलोद्भूत होते हुए भी,हाशिये के समाज की पीड़ा से सम्पृक्त रहे और तथाकथित जातीय श्रेष्ठता के पुरोधाओं से निरन्तर जूझते और लड़ते रहे। यह संघर्ष निराला जी के मन में उनके प्रति सहानुभूति के कारण नहीं रही,बल्कि यह उनकी उस समाज के प्रति उपजी 'सहज अनुभूति' से रही। इसका परिणाम रहा कि महाप्राण निराला स्वयं लोगों की नजरों में बहिष्कृत रहे। 'चुनौतियाँ और 'विद्रोह' निराला जी के सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्र के अस्त्र रहे।

गौतम बुद्ध के बाद, साहित्य के अर्द्ध सहस्राब्दि के अन्तराल पर अवस्थित कबीर के पश्चात् यदि कोई कवि–साहित्यकार सामाजिक चुनौतियों,धार्मिक पाखण्डों,रूढ़ियों,कथनी–करने के अन्तराल पर,निरन्तर पदाघात करता रहा, तो वह हैं–महाप्राण निराला। मान्यतानुसार कबीर उच्च कुलोद्भूत विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न हुए और जुलाहे कुल में पालित–पोषित हुए और निराला ब्राह्मण कुल में उद्भूत हुए। एक ने हिन्दू–मुस्लिम की थोथी सामाजिक रूढ़ियों,बाह्य आडम्बरों,जातीय उच्चाभिमान,पूजा–पाठ की विधियों पर पदाघात किया,तो दूसरे ने ''ये कान्यकुब्ज कुल कुलांगार,खाकर पत्तल में करें छेद''[2] कह कर ब्राह्मणों पर कशाघात किया। एक 'पोथी ज्ञान' के स्थान पर 'प्रेम के माहात्म्य' को स्थापित कर रहा था,तो दूसरा 'सामाजिक समरसता' की स्थापना में सामाजिक क्रान्ति का संवाहक बना रहा। कबीर ने 'तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखिन की देखी' की स्वानुभूति पर बल दिया, तो महाप्राण निराल जी ने भी उद्घोष किया कि 'मैं लिखता हूँ । यह लिखा हुआ उद्धृत नहीं, देखा हुआ है।'

सम्प्रति ,जातीय,साम्प्रदायिक चुनौतियों का संकट है। कबीर युग में यह अधिक रहा। अपढ़ और जन सामान्य में ज्ञान बाँटा गया। ईश्वर एक है,सब का जन्म एक ही तरीके से होता है 'को बाभन को सूदा'। बात समझ में आ गयी और एक पूरा वर्ग और सम्प्रदाय दीक्षित होने लगा कि समाज में ऊँच–नीच ईश्वर का बनाया हुआ नहीं है,यह वर्ग विशेष द्वारा सुविधाओं हेतु निर्मित किया गया है। वर्तमान समय में भी, 'दलित विमर्श' तार्किक रूप से मुखर एवं प्रखर होकर, पुरानी परम्पराओं पर पदाघात कर रहा है, फिर भी,अभी समाधान की चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

निराला कथाकार प्रेमचन्द की परम्परा के साहित्यकार हैं। प्रेमचन्द के कथा–साहित्य के अन्तिम पड़ाव–'गोदान','कफन', 'पूस की रात' आदि की यथार्थवादी चेतना का संस्कार निराला की कविता और उपन्यास–कहानियों में बड़ी तीव्रता के साथ देखने को मिलता है। इसे प्रभाव–परम्परा तो माना ही जा सकता है,निराला जी का एक स्वाभाविक 'गढ़ाकोला'की ग्राम्य चेतना के संस्कार और बंगाल के महिषादल की सामाजिक–सांस्कृतिक समृद्धि के मध्य,सामन्तवादी सोच के तले प्रपीड़ित निम्नवर्गीय जन की पीड़ा का उद्घोष भी माना जा सकता है।

बंगला के कवि प्रमेन्द्र मित्र के दल का घोषणा–पत्र रहा कि–

''आमि कवि जत कामारेर
आर कासारीर आर छूतारेर
मूठे मजूरेर
आमि कवि जत इतरेर।''[3]

अर्थात् 'मैं लुहारों,पीतल का काम करने वालों,बढ़इयों और रोजनदारी मजदूरी का कवि हूँ, मैं दलित का कवि हूँ।'क्या बंगाल,क्या लखनऊ,क्या इलाहबाद,क्या बैसवाड़ा,गढ़ाकोला–डलमऊ– सभी जगह 'शोशित–पीड़ित' जन की व्यथा–कथा एक जैसी रही। 'दलितों'की पीड़ा हो अथवा 'पुजारी'पर प्रहार अथवा उनके अन्य पात्र, उन सभी पर सामन्ती व्यवस्था की क्रूरता एक जैसी रही है। एतदर्थ ,गद्य–पद्य के दो दृश्य द्रष्टव्य हैं–

© SHARAD

'चोटी की पकड़' उपन्यास में सामन्ती वैभव के प्रति आक्रोश है– ''यह स्वर्ग दिखता हुआ दृश्य नरक है। ये राजे–महाराजे राक्षस। ये देवी–देवता पत्थर के,काठ के, मिट्टी के''।[4]

पद्य के क्षेत्र में दूसरा दृश्य है–

'तोड़ती पत्थर' का –
'वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।
गुरु हथौड़ा हाथ
करती बार–बार प्रहार–
सामने तरु मालिका अट्टालिका,प्राकार।
देखता देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा–छिन्नतार,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार रवा रोई नहीं।''[5]

साहित्य में निरालाजी के –दो विषय अत्यधिक प्रिय रहे–एक तो साहित्य के महारथियों को गर्वोक्ति की सीमा तक चुनौती देना और दूसरा दलितों एवं स्त्रियों के प्रति असीम औदार्य। साहित्य की चुनौती द्रष्टव्य है – 'राजनीति के मैदान में जिस तरह बड़ी–बड़ी लड़ाइयों के लिए सिर उठाना आवश्यक है,उसी तरह साहित्य के मैदान में भी हैं।' इसी प्रकार –''जब तक किसी बहते प्रवाह के प्रतिकूल किसी सत्य की बुनियाद पर ठहरकर कोई उपन्यास नयी–नयी रचनाओं के चित्र नहीं दिखलाता,तब तक न तो उसे साहित्यिक शक्ति ही प्राप्त होती है और न समाज को नवीन प्रवहमान जीवन।''[6]

कथा के क्षेत्र में 'कुल्ली भाट' 'बिल्लेसुर बकरिहा' 'चतुरी चमार' के तेवर और काव्य में 'जूही की कली' के रूप में मुक्त छन्द का प्रयोग इसके उदाहरण हैं। जहाँ तक स्त्रियों एवं दलितों के प्रति निराला के चिन्तन एवं भाव बोध का प्रश्न है–वह वर्तमान भारत के आधुनिक भारतीय चिन्तन की सुचिन्तित परम्परा और सामाजिक उत्थान–पतन के अवगाहन का निचोड़ है,जो वह समाज को देना चाहते हैं।

एक तरफ महाप्राण निराला के अन्तः करण में 'बैसवाड़े के अवध क्षेत्र का सामाजिक भेद–भाव और जातीय ऊँच –नीचजन्य तिरस्कार,जो कमोवेश पूरे भारत में परिलक्षित होता है,अन्तः–सलिला की भाँति प्रवहमान रही,दूसरी तरफ बंगाल की धरती पर रहते हुए, राजा राममोहन राय, रामकृष्ण परमहंस,स्वामी विवेकानन्द,रवीन्द्रनाथ टैगोर,अरविन्द घोष, स्वामी सारदानन्द आदि के अद्वैतवाद,व्यावहारिक वेदान्त,योग,भक्ति,कर्म एवं चिन्तन में सामन्जस्य का विश्वव्यापी सामाजिक चिन्तन उनके, प्रेरणा–पाथेय रहे।स्वामी दयानन्द सरस्वती के आर्य समाज ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' तथा 'स्त्री दलित शिक्षा' का शंखनाद फूँका तथा महात्मा गांधी– के सामाजिक चिन्तन और इकबाल के क्रान्तिकारी स्वर उनके साहित्य और जीवन में ज्यों के त्यों तो नहीं,पर उसके व्यवहारिक पहलू प्रेरक रूप में अवश्य प्रभावित करते रहे।

'दलित–स्त्री–विमर्श' के उत्कर्ष में 'राम की शक्ति पूजा' के ''नामों के गुण–ग्राम का मनन''[8] और 'चिन्तन' बड़े काम का रहा । साहित्य–शास्त्र में नायकों की परिभाषा 'सद्वंशो क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः' का मिथक टूट गया और उनका स्थान लिया–'गोदान' के 'होरी'की ही भाँति 'कुल्लीभाट' 'बिल्लेसुर बकरिहा' और 'चतुरी चमार' के सामान्य जन ने । 'जातीय' अभिमान का टूटना और 'कर्म और गुण' की स्थापना के स्वर स्थापित हुए। 'विधवा','भिक्षुक' 'दीन' तोड़ती पत्थर' 'कुकरमुत्ता' आदि काव्यपरक रचनाएँ भी सामाजिक व्यवस्था की विषमता पर प्रहार करती हैं।

© SHARAD

महाप्राण निराला के कथा–साहित्य में, नायिका प्रधान मनोवृत्ति का प्राधान्य रहा। अलका, अप्सरा, प्रभावती, निरूपमा, लिली, सखी,सुकुल की बीबी,जानकी,श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी,हिरनी,श्यामा,ज्योतिर्मयी आदि कथा–साहित्य के 'शीर्षक' नारियों की प्रतिष्ठा और समता की क्रान्तिकारी छवि उत्कीर्ण करने वाली हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि स्त्री–दलितों के प्रति महाप्राण निराला की सोच कितनी चैतन्य थी,चुनौतीपूर्ण थी। समाज के पुराधाओं के सम्मुख यह निराला के लिए 'अपराजेय समर' था, पर उन्होंने इस समर को अपने 'अपराजेय मन' के साथ अपने पात्रों को 'उतिष्ठ,जाग्रत,वारान्निवोधयत्'अर्थात् 'उठो,जागो और श्रेश्ठता का वरण' करने का 'अजेय' मन्त्र दिया।

दलित चतुरी पढ़ा–लिखा नहीं हैं,पर कबीर के पदों का वह गायन करता है। लेखक का कहना है 'चतुरी तुम पढ़े लिखे होते,तो पाँच सौ की जगह पाते।' जूता गाँठ कर जिन्दगी जीने वाला चतुरी बहुत चतुर है।

श्रम–संस्कृति की प्रतिष्ठा पर उसे गर्व है, पर सामन्ती व्यवस्था से टकराकर मुकदमें में तबाह होने पर भी,उसे सन्तोष है कि अब उसे जूते देते हुए सर्वदा के लिए जमींदार की गुलामी (जूते देते जाने की प्रथा) से मुक्ति मिल गयी।चतुरी की यह खुशी वैसे ही है,जैसे 'पूस की रात' में हल्कू ने नील गायों द्वारा खेत का सफाया करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए अपनी पत्नी से कहा था–''चलो–पूस की रात की ठण्ड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।''[9] निश्चय ही ''निराला नई चेतना चाहते हैं, सोये हुए को जगाना चाहते हैं। चतुरी के आत्मसम्मान को उसकी चेहरे से निहारना चाहते हैं''।[10] वर्ण व्यवस्थाजन्य छुआछूत का सामाजिक भेदभाव, निराला के क्रान्तिकारी व्यक्तित्व और चिन्तन के सम्मुख टिक नहीं सका।सामन्ती व्यवस्था की मार से समाजत्रस्त है, किन्तु वह अधिक त्रस्त है,जाति–पाँति,ऊँच–नीच की भावना से तथा सवर्णो की हेय दृष्टि से ।

डॉ0 दूधनाथसिंह ने निराला के साहित्य में, जिसे लोग प्रगतिशील चेतना कहा करते थे, उसे उन्होंने निराला के सन्दर्भ में 'सामान्य की प्रतिष्ठा' अथवा 'उपेक्षित का उन्नयन' कहना ज्यादा उपयुक्त समझा है।''[11] निराला जी ने कुल्ली भाट,बिल्लेसुर बकरिहा,चतुरी चमार,चोटी की पकड़, काले कारनामे आदि में 'उपेक्षित का उन्नयन'अथवा 'प्रतिष्ठा'करने का पुरजोर वकालत की है।

'कविन मा आला भा,निराला गढ़क्वाला का' अर्थात् 'गढ़क्वाला ग्राम के कवि निराला श्रेष्ठ हैं' 'वाली लोकोक्ति सिद्ध करती है कि जन साधारण में भी बहुत दूर तक उनकी प्रतिभा का अभिनन्दन औश्र गौरव गूँजता था।''[12]

एक तरफ निराला का ब्राह्मणत्व, दूसरी ओर डलमऊ का दलित–समाज।डॉ0राम विलास शर्मा ने चित्र खींचते हुए लिखा है– ''डलमऊ में चमार,पासी,धोबी और कोरी दोने में फूल लिये हुए निराला के सामने रखने लगे। डर के मारे हाथ पर नहीं दे रहे थे कि कहीं छू जाने पर मुझे नहाना होगा। तब निराला का मन ग्लानि से भर गया । निराला ने उनसे कहा–आप लोग अपना–अपना दोना मेरे हाथ में दे दीजिए और मुझे उसी तरह भेंटिये,जैसे मेरे भाई भेंटते हैं।''[13]

धार्मिक–साम्प्रदायिक समन्वय के बाधक तत्वों पर निराला जी सदैव कशाघात करते रहे। कुल्ली भाट लोगों की दृष्टि में हेय है, पर निराला की दृष्टि में वह ग्राह्य है। कुल्ली का एक मुसलमान स्त्री से प्रेम है,यह समाज मान्य नहीं है।कुल्ली की मृत्यु पर तथाकथित सम्भ्रान्त लोग दाह–संस्कार में भाग नहीं लेते,पंडित मन्त्रोच्चारण नहीं करता,पर 'निराला जी स्वयं 'होम' कराने की ठान लेते हैं। समाज बहिष्कार से उन्हें कोई भय नहीं है।

विधवा–विवाह,अनमेल विवाह, दहेज–समस्या आदि पर निराला जी ने ज्योतिर्मयी, श्यामा, सफलता, सुकुल की बीबी,जानकी,श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी आदि कहानियों के माध्यम से सामाजिक क्रान्ति की चेतना को जाग्रत किया है।

राजा राममोहनराय के 'ब्रह्म समाज', स्वामी दयानन्द सरस्वती के 'आर्यसमाज'स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द,महात्मा गान्धी,रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि के विचार और चिन्तन स्त्री सम्बन्धी समस्त रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों को तोड़ने का महत् कार्य किया था। निराला जी का उदार चेता मन इन सब से संस्कारित था। स्त्री

© SHARAD

–शिक्षा पर निराला जी ने अपने साहित्य के पात्रों के माध्यम से प्रखर प्रचार–प्रसार किया, दलितों में शिक्षा की चेतना को प्रवाहित किया तथा समाज से 'दो–दो हाथ' करने के नवजागरण का मन्त्र फूँकने के लिए शिक्षा के अस्त्र बल का सम्बल दिया।

वर्ण –व्यवस्था के वैषम्य की महाप्राण निराला ने दवा खोजी।'चतुरी चमार' में उन्होंने लिखा है–''चमार दबेंगे,ब्राह्मण दबायेंगे। दवा है–दोनों की जड़ें मार दी जायें।'' निराला जी ने उन सभी जातियों के चरम उत्थान के स्वप्न देखे थे, जो सदियों से पददलित रहीं।शूद्रों के उत्थान में उनका अटूट विश्वास था। एक ऐसे आदर्श समाज की कल्पना कर रहे थे,जिसमें वर्ण के आधार पर उच्च–नीच का निर्णय न हो ।उनका मानना था कि–''समाज का सर्वोत्तम बाह्य निष्कर्ष इस समय राजनीतिक संगठन हैं,जहाँ मनुष्य मनुष्य के ही वेश में उतरता, समय और मनुष्यता के साथ पूर्णरूपेण मिल जाता है। इस प्रकार के दे
देशव्यापी, बल्कि विशद् भावना द्वारा विश्वव्यापी मनुष्य आगे चलकर आपही अपनी जाति का सृजन करेंगे,जहाँ ब्राह्मण सज्जन और वैश्य सज्जन की एकता में फर्क न होगा,जहाँ ब्राह्मण और वैश्य केवल कर्म के ही निर्णायक होंगे,पद उच्चता के नहीं। उस स्वतन्त्र भारत में इस वर्ण –व्यवस्था से केवल परिचय ही प्राप्त होगा,उच्च–नीच का निर्णय नहीं।''[14]

निरालाजी ने विश्वास के साथ कहा है– ''शूद्र शक्तियों से यथार्थ भारतीयता की किरणें फूटेंगी, वे ही भविष्य के ब्राह्मण,क्षत्रिय और वैष्य हैं और ब्राह्मण,क्षत्रिय आदि दृप्त जातियाँ शूद्र।.....भारत तभी तक पराधीन है,जब तक वे नहीं जागते।'' डॉ0 रामविलास शर्मा ने उल्लेख करते हुए कहा है कि जातीय सन्दर्भ में निराला जी का मत हैं कि '' दासत्व में न ब्राह्मणत्व रहता है न क्षत्रियत्व। वे असवर्ण विवाह का स्वागत करते हैं। उनका मानना है कि ''आज के वैषम्य से'' इसी प्रकार साम्य का जन्म होगा।''

वस्तुतः,''सामाजिक क्षेत्र में व्याप्त ढोंगों में उनका विश्वास ही नहीं था,उसी तरह धार्मिक क्षेत्र में फैले हुए हथकंडों के भी वे शत्रु थे। धर्म के कर्म–कांडमय रूप का उन्होंने तिरस्कार किया। छुआछूत–सम्बन्धी व्यवस्था,धार्मिक आडम्बर,मूर्तिपूजा,पण्डों और देव–भक्तों के अन्ध अमानवीय व्यवहार–इन सबकी उन्होंने पूरी खबर ली थी।''वे एक अत्यन्त जागरूक,चिन्तक,समाज सुधारक एवं मनीशा साहित्यकार थे, जिसकी आवाज संस्कृति के खोये हुए सत्यों को,लुप्त या विकृत मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करती है और जो अपने आत्म–द्रव से एक नया इतिहास रचता है,नयी संस्कृति ढालता है,साथ–ही जिसके व्यक्तित्व की घटनाएँ अमर कथाएँ बन जाती हैं और जिसकी वाणी के स्वर युग–युग के कानों में झंकृत होते रहते हैं। निराला जी ऐसे ही ओजस्वी–तेजोमय जागरूक साहित्यकार थे।''[15]

निश्चय ही,निराला के सम्पूर्ण रचना के संघर्ष को उनके व्यक्तित्व और उनकी अनुभव –सम्पन्नता के सन्दर्भों में ही समझा जा सकता है।'दलित विमर्श' और 'स्त्री विमर्श' की चेतना,उनकी अनुभव सम्पन्नता और मानवीय संवेदना का विस्तार ही है।

सन्दर्भ सूची :–

1. वृहद् हिन्दी कोश–(सम्पा0)– कालिका प्रसाद–ज्ञानमण्डल लिमिटेड,बनारस पृष्ठ–1215
2. निराला–अपरा–पृष्ठ–153
3. डॉ0 लक्ष्मीकान्त पाण्डेय–भारतीय साहित्य(बांग्ला)–कानपुर–पृष्ठ–157
4. डॉ0 रामविलास शर्मा– निराला की साहित्य साधना–भाग–2,पृष्ठ.43
5. निराला– राग–विराग–(सम्पा0) डॉ0 रामविलास शर्मा –पृष्ठ –118
6. डॉ0 बल्देब प्रसाद मेहरोत्रा– कथाशिल्पी निराला–पृष्ठ–161.
7. डॉ0 विश्वनाथ नरवणे– आधुनिक भारतीय चिन्तन–राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली पृश्ठ–9
8. निराला –अपरा–पृष्ठ–51
9. डॉ0 'बटरोही' हिन्दी कहानी के अठारह कदम–पृष्ठ–77.

© SHARAD

10. डॉ0 नरेन्द्र शुक्ल–निराला के गद्य साहित्य में प्रगतिशील चेतना–पृष्ठ–131.
11. निराला–कुकरमुत्ता–(भूमिका डॉ0दूधनाथ सिंह) पृष्ठ–22.
12. डॉ0 भगीरथ मिश्र – निराला–काव्य का अध्ययन–पृष्ठ–39
13. डॉ0 रामविलास शर्मा– निराला की साहित्य साधना –भाग–2,पृष्ठ–29.
14. निराला–प्रबन्ध प्रतिमा–पृष्ठ–344–45.
15. डॉ0 भगीरथ मिश्र– निराला काव्य का अध्ययन–पृष्ठ–82–84.

****

© SHARAD